षष्ठ अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरुष संबंधों की विविध समस्याएँ''

षष्ठ अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरूष संबंधों की विविध समस्याएँ"

प्रस्तावना -

मानव जीवन में भूक के समान एक और मूल प्रवृत्ति है काम । ऊपर से अत्याधिक सरल, सज्जन एवं सदाचारी दिखाई देनेवाले व्यक्ति के भीतर भी नारी रूप के प्रति बड़ी उत्कंठा और आकर्षण होता है । स्त्री-पुरूष का आकर्षण चिरंतन है और यही उनकी सबसे बड़ी दुर्बलता है । स्त्री-पुरूष संबंधों के अन्तरंग विश्लेषण में मोहन राकेश की गहरी रूचि परिलक्षित होती है । यह उनका प्रिय विषय होने के कारण उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में जो चित्रण किया है वह ज्यादातर स्त्री-पुरूष संबंधों का ही दृष्टिगोचर होता है । फिर चाहे वह दांपत्य जीवन के संदर्भ में हो, रिश्ते के संदर्भ में हो या काम के संदर्भ में हो ।

आज के समाज में नर-नारी का जो स्वस्थ संबंध होना चाहिए था वह नहीं रहा है । सामाजिक आदर्श के अनुसार नर (पुरूष) को नारी (स्त्री) का और नारी को नर का साथी बनाना अनिवार्य है । सहायता, सेवा, सुरक्षा और शारीरिक भूख की तृप्ति के लिए समाज में नर-नारी को विवाह के सूत्र में बाँधने की व्यवस्था प्रचलित थी और आज भी हैं । विवाह के रूप में यौन संबंध सन्तानोंत्पत्ति का साधन है । इसलिए यह सामाजिक कर्म माना जाता है ।

मानव समाज निरंतर अपनी प्रगति कर रहा है । आज का मानव शिक्षित होने के साथ-साथ अत्याधुनिक बनता जा रहा है । इसी कारण आज नैतिकता के मानदंड और मूल्य बदलते जा रहे हैं । आज नव युवक - युवतियों का वर्ग निड़र बन पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर पुराने मूल्यों तथा रूढ़ियों के प्रति विद्रोह कर रहा है । इसी कारण पुराने मूल्यों और रूढ़ियों का खण्ड़न हो रहा हैं । फलत: स्त्री-पुरूष के संबंध नये रूप में प्रस्तुत होते दिखाई दे रहे है । स्त्री-पुरूष के ये नये बनते बिगड़ते संबंध समाज की एक ज्वलंत समस्या है । राकेशजीने अपनी रचनाओं में बनते-बिगड़ते संबंधों की ओर ही संकेत किया है । इसी स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण पारिवारिक संबंधों में विघटन होता जा रहा है । भौतिक समृद्धि जनसाधारण का लक्ष्य होती जा रही है । स्त्री-पुरूष संबंधों के परिप्रेक्ष्य में राकेश के उपन्यासों का अध्ययन करने से निम्नलिखित समस्याएँ परिलक्षित होती है ।

6.1 परिवार में बढ़ते तनाव की समस्या -

स्त्री-पुरूष के संबंध जब-जब भी बिगड़ते है तब-तब उनके पीछे कुछ-न-कुछ कारण रहा करते हैं । किंतु फल यह होता है कि दांपत्य जीवन में विखराव आता है । जब कोई स्त्री अथवा अथवा पुरूष अपनी इच्छा के अनुसार अन्य किसी पुरूष अथवा स्त्री से काम संबंध स्थापित करता है तब उसके परिवार में तनाव बढ़ता जाता है । 'न आने वाला कल' उपन्यास के चेरी और लारा के दांपत्य जीवन में मिसेस दारूवाला आ चुकी है । इसी कारण दोनों का दांपत्य जीवन तनाव ग्रस्त बन गया है । चेरी अपनी पत्नी से छुटकारा चाहता है । इसलिए वह उसे मायके भेजकर मिसेस दारूवाला के साथ जुड़ना चाहता है । परंतु उसकी पत्नी मायके जाने से इन्कार करते हुए कहती है - "यह मुझे यहाँ से भेजकर मुझसे छुट्टी पाना चाहता है।" [1] स्पष्ट है कि मिसेस दारूवाला अपने दांपत्य जीवन में न आए इसलिए लारा अपने पति चेरी को छोड़कर नहीं जाती । परिणाम स्वरूप दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव पैदा हो चुका है ।

साथ ही उनके परिवार में संदेह के कारण भी तनाव पैदा हुआ दिखाई देता है । 'न आने वाला कल' उपन्यास के दूसरे पात्र शारदा और कोहली के दांपत्य जीवन में भी संदेह के कारण तनाव पैदा हुआ दिखाई देता है । कोहली अपनी पत्नी शारदा पर हमेशा शक करता हे । इतना ही नहीं तो वह अपने नोकर को भी काम से निकाल देता है । जब कोहली अपने नौकर को अपने कमरे में बैठा देखता है तब उसे शक होता है । वह उसे काम से निकालकर पत्नी शारदा से पूछता है कि - "यह आदमी क्या कर रहा था यहाँ ?" [2] स्पष्ट है कि इससे दोनों में झगड़ा शुरू होता है । इससे ज्ञात होता है कि संदेह के कारण उन दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा है ।

'अन्तराल' उपन्यास की नायिका श्यामा कुमार के साथ अपना नामहीन संबंध स्थापित करना चाहती है । सीमा भी अपने मित्रों के साथ घूमती रहती है । इन दोनों की आदतें एक-दूसरे को पसंद नहीं हैं । इसी कारण उनके परिवार में तनाव बढ़ गया है । 'अंधेरे बंद कमरे' के हरबंस और नीलिमा, पति-पत्नी तो हैं लेकिन दोनों के आचार-विचारों में भिन्नता है । इसी कारण दोनों के परिवार में तनाव बढ़ गया है । स्पष्ट है कि राकेशजी के उपन्यासों के परिवार में बढ़ते तनाव का चित्रण दृष्टिगोचर होता है । पारिवारिक जीवन में बढ़ता तनाव राकेश के

उपन्यासों में जगह-जगह परिलक्षित होता है । यह तनाव ही उस परिवार की प्रधान समस्या बना हुआ परिलक्षित होता है । विवेच्य उपन्यासों में इस समस्या का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है ।

6.2 पारिवारिक संबंधों में आये विघटन की समस्या -

स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण पारिवारिक संबंधों में बहुत बार विघटन की समस्या उत्पन्न होती है ।

'अन्तराल' उपन्यास की नायिका श्यामा शादी से पहले राजीव से प्रेम करती थी । "वह पहला व्यक्ति था जिसके साथ उसके ब्याह की चर्चा की जाने लगी थी और जिसे अपने मन में उसने होने वाले पति के रूप में स्वीकार भी कर लिया था ।"[3] राजीव भी श्यामा के घर आता रहता था । परंतु राजीव जब समाज सेवा का बहाना बनाकर श्यामा के साथ विवाह करने के प्रस्ताव को टाल कर एक संसद सदस्य की छोटी बहन के साथ विवाह करता है, तब श्यामा और उसके परिवार वालों को बहुत बुरा लगता है । उसी समय से उन दोनों के परिवारों में तनाव बढ़ जाता है । परंतु श्यामा को विश्वास था कि वह एक-न-एक दिन फिर से शादी के लिए तैयार हो जायेगा - "इसलिए राजीव का पक्ष लेकर एक बार वह घर के लोगों से लड़ भी ली थी ... ।"[4] इसी कारण श्यामा के परिवार में तनाव बढ़कर विघटन की समस्या उत्पन्न हुई दिखाई देती है ।

श्यामा का उसकी सास बीजी और ननद सीमा के साथ जो संबंध है वह सिर्फ पैसों पर टिका हुआ नजर आता है । जब सीमा अपनी स्वतंत्र प्रवृत्ति के कारण शराब पीकर रात के समय युवकों के साथ घूमती है तब श्यामा को गुस्सा आता है । दोनों में झगड़ा शुरू हो जाता है । तब सीमा कहती है "उसके लिए मुझे अलग रहना पड़ेगा, तो मैं अलग जा रहूँगी ।"[5] इसप्रकार स्पष्ट है कि स्त्री-पुरुष कं बनते - बिगड़ते संबंधों के कारण पारिवारिक विघटन की समस्या उपस्थित होती है ।

6.3 नैतिकता के लोप की समस्या -

कभी-कभी स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण नैतिकता का लोप भी हो जाता है । इसी कारण जातीय संकटों का सामना भी करना पड़ता है । समाज उन स्त्री-पुरूषों की ओर घृणास्पद दृष्टिसे देखता है । तथा कभी-कभी उन्हें शिक्षा भी दी जाती है ।

राकेश जी के उपन्यासों में धार्मिक आस्थाओं का उल्लंघन 'अन्तराल' की सीमा तथा 'अंधेरे बंद कमरे' की खुरशीद द्‌वारा हुआ दिखाई देता है । सीमा स्वतंत्र प्रवृत्ति की आधुनिक नारी होने के कारण शराब का सेवन करती है । भारतीय समाज में पुरूष मित्रों की संख्या बहुत मिलती है परंतु लड़की के 'बॉय-फ्रेन्ड़' का फैशन भारतीय समाज में अभी भी शैशव अवस्था में है । 'अंतराल' उपन्यास की सीमा के 'बॉयफ्रेंड' हैं । इतना ही नहीं तो वह शराब के नशे में चूर होकर रात को देर-देर तक उनके साथ घूमती रहती है । वह श्यामा से कहती है - ''मेरे दो एक बॉय फ्रेंड़ हैं जिनके साथ मैं बाहर जाती हूँ ।'' [6] इस प्रकार सीमा अपने पारंपारिक बंधन को कोई महत्व नही देती । नैतिकता को वह तिलांजली देती हुई परिलक्षित होती है । उसके व्यवहार से यह स्पष्ट होता है कि अब दिनों-दिन नैतिकता लुप्त होती जा रही है । उसका स्थान अब अनैतिकता ले रही है । वर्तमान काल में यह नैतिकता का लोप होना एक भयावह समस्या का रूप धारण कर रही है ।

'अंधेरे बंद कमरे' की सुषमा और खुरशीद भी नैतिकता को महत्व नहीं देती । सुषमा एक आधुनिक नारी है । वह उपने लिए चुने हुए नये मूल्यों को लेकर जीती है । उसे किसी भी प्रकार के नैतिक धर्म के प्रति किसी भी प्रकार की आस्था नहीं है । खुरशीद ने अपने पिता की सेवा करने का व्रत ले रखा था । इसी व्रत के कारण वह शादी भी नहीं करना चाहती । परंतु वह अपनी भावनाओं पर काबू रखने में असफल हो जाती है । वह नैतिकता का गला घोंट कर कुँवारी माता बन जाती है । यह खुरशीद, सुषमा और सीमा का आचरण नैतिकता के विरूद्‌ध है । इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में स्त्री-पुरूष के बनते बिगड़ते संबंधों के कारण नैतिकता का लोप होता हुआ दिखाई दे रहा है ।

6.4 दु:खमय दांपत्य जीवन की समस्या -

संसार में जब किसी के दांपत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का आगमन होता है तब वह दांपत्य जीवन नया मोड़ लेता है । पति-पत्नी के बीच जब तीसरा आदमी आता है तब वह दांपत्य जीवन दु:खमय बन जाता है । किंतु कभी किसी अन्य कारणों से भी दम्पत्ति दु:खमय दांपत्य जीवन जीते है ।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास के हरबंस और नीलिमा दोनों पति-पत्नी तो हैं लेकिन दोनों में अहं ज्यादा है । दोनों के आचार-विचार, रूचियों में भिन्नता हैं । दोनों की महत्वकांक्षाओं में भी भिन्नता है । अत: उनका दांपत्य जीवन दु:खमय है । नीलिमा स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी है और वह अपने खुद के बनाये मार्ग पर चलती

है । इससे हरबंस के अहं को ठेस पहुँचती है । तब नीलिमा तथा हरबंस के बीच झगड़ा चलता है । दोनों में हर वक्त झगड़ा चलता था । यह बताते हुए नीलिमा कहती है - ''हम पति-पत्नी न होकर एक - दूसरे के दुश्मन हो और साथ रहकर एक-दूसरे से किसी बात का बदला ले रहें हों ।''[7] इससे ज्ञात होता है कि दोनों का दांपत्य जीवन दु:खमय है ।

'न आने वाला कल' उपन्यास के पात्र चेरी और लारा के बीच मिसेस दारूवाला का आगमन हो जाने के कारण उनका दांपत्य जीवन भी दु:खमय बना है । शोभा और मनोज का दांपत्य जीवन भी दु:खमय ही है । दोनों पति-पत्नी तो हैं लेकिन शोभा का यह दूसरा विवाह है और मनोज का पहला । मनोज का यह पहला विवाह होने के कारण शोभा से प्यार की चाह रखना स्वाभाविक है । परंतु शोभा उसे प्यार न दे सकी । तब मनोज को शादी करने से पछतावा होता है । मनोज को लगता है कि - ''उसकी नजर में मैं अब भी एक अकेला आदमी था जिसका घर उसे संभालना पड़ रहा था ।''[8] इसी के साथ-साथ, उपन्यास के अन्य दंपत्ति भी किसी न किसी कारण दु:खमय दांपत्य जीवन ही जी रहे हैं ।

'अन्तराल' उपन्यास की नायिका श्यामा का विवाह जब देव के साथ हो जाता है । यह दोनों का विवाह श्यामा के तथा देव की मर्जी नुसार नहीं तो देव की माँ के खातिर हो चुका है । इसलिए देव पत्नी श्यामा से कुछ भी नहीं कहता था ।

राकेशजी का चौथा उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में चित्रित खालका और बेगम का दांपत्य जीवन भी यौन संबंधों में सुखमय नजर नहीं आता । इससे स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध के चित्रण में ज्यादातर दांपत्य जीवन दु:खमय ही दिखाई देता है ।

6.5 मूल्यों के खण्ड़न की समस्या -

राकेश के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों की अगली समस्या है मूल्यों के खण्ड़न की समस्या । उपन्यास में चित्रित समाज में तथा युग में परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है । इसी परिवर्तन के कारण मूल्यों का खण्ड़न हो रहा है ।

'न आने वाला कल' उपन्यास की शारदा अधेड़ पति की मारपीठ को झेलती है । जिसकी वह दूसरी पत्नी है । शारदा झाड़ू-बर्तन आदि काम ठिक ढंग से करती है, पर उसे पति का प्रेम तथा सम्मान नहीं मिलता । उसे बहुत बुरा लगता है । वह दर्द से कहती है - ''मेरे माँ-बाप ने पता नहीं क्या देखकर मुझे इसके साथ ब्याह दिया । यह भी कोई आदमी है ।''[9] अपने पति के मारपीट से वह तंग आ चुकी है । वह अब पुरानी रूढ़ियों और मूल्यों को नहीं मानती । वह मनोज को अपनी दूसरी शादी करने के इरादे से कहती है ''मुझे तो फिर भी कोई न कोई मिल ही जाएगा ।''[10]

'अन्तराल' की सीमा भी पुराने मूल्यों को तोड़ना चाहती है । वह मुस्लिम युवक से शादी करना चाहती है । उपन्यास की नायिका श्यामा विधवा है । वह कुमार के साथ नामहीन संबंध स्थापित करना चाहती है और अपना जीवन यापन करना चाहती है । इससे ज्ञात होता है कि श्यामा विधवा होते हुए भी वैवाहिक जीवन के समान जीवन जीने के लिए ही कुमार से संबंध स्थापित करती है । स्त्री-पुरूष का वर्तमान कालीन संबंध संघर्षपूर्ण एवं तनावपूर्ण होने के कारण सामाजिक मूल्यों का खंड़न हो रहा है । यह जानकारी देते हुए डा. घनानंद शर्मा लिखते हैं - ''श्यामा का देव के साथ विवाह धार्मिक वेदी पर संपन्न न होकर वकीलों की उपस्थिति म हस्ताक्षर करके होता है । ये स्थितियाँ सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को खंड़ित करती जा रही है ।''[11] इससे स्पष्ट है कि श्यामा, सीमा और शारदा साथ ही 'काँपता हुआ दरिया' की नूरा, जो मामदा जैसे बॉय फ्रेन्ड़ के साथ घर में विरोध होते हुए भी घूमती रहती है। स्पष्ट है कि बदलते स्त्री-पुरूष संबंधों की वजह से परंपरागत मूल्य खंड़ित हो रहे हैं ।

विवेच्य उपन्यासों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि इनमें मूल्यों के टूटन की समस्या भयावह बनती जा रही है । मूल्य कालबाह्य हो तो उनके टूटन से कोई आपत्ति नहीं हो सकती किंतु जिन मूल्यों पर सामाजिक और पारिवारिक स्वास्थ निर्भर होता है उनके टूटने से निश्चय पारिवारिक और सामाजिक क्षति होती है । अर्थात मूल्यों की टूटन वर्तमान काल की प्रमुख समस्या माननी होगी जिसे राकेश ने अपने उपन्यासों में पर्याप्त मात्रा में चित्रित किया है ।

शादी किए बीना किसी पुरूष या स्त्री ने यौन संबंध रखना, विवाह किए बिना संतान को जन्म देना, विवाहित होते हुए भी पर स्त्री या पुरूष से संबंध रखना आदि ऐसी बाते हैं जो जीवन मूल्यों को तिलांजली

देती है ओर सामाजिक स्वास्थ को बाधा पहुँचाती है । विवेच्य उपन्यासों में इसी अर्थ में मूल्यों के टूटन की समस्या दृष्टिगोचर होती है । खंड़ित मूल्य वर्तमान कालीन जीवन का अंग बनते जा रहे हैं ।

6.6 'सेक्स' के अतिरिक्त आकर्षण की समस्या -

विवेच्य उपन्यासों में स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों की अन्य एक समस्या है 'सेक्स' के अतिरिक्त आकर्षण की । आज प्राय: व्यक्ति में भौतिक समृद्धि का आकर्षण जन्मजात है । उसकी पूर्ति करने के लिए वह तड़फता है ।

'अंधेरे बंद कमरे' की सुषमा और मधुसूदन में भी भौतिक आकर्षण ही है । दोनों भी एक दूसरे की ओर आकर्षित हो चुके है । मधुसूदन सुषमा को किसी भी हालत में पाना चाहता है और उसके साथ विवाह कर अपना घर बसाना चाहता है ।

'अन्तराल' की श्यामा और उसके जीजाजी प्रो. मलहोत्रा का जो संबंध है वह ज्यादातर भौतिक और सेक्स के अतिरिक्त आकर्षण का एक उदाहरण है । प्रो. मलहोत्रा शादीशुदा आदमी है फिर भी वे अपनी साली श्यामा के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करना चाहते हैं । परंतु श्यामा उन्हें प्रतिसाद नहीं देती ।

श्यामा और गोपाल जी का जो संबंध सामने आता है वह भी अपने काम की पूर्ति के लिए ही स्थापित हुआ नजर आता है । गोपाल जी एक शादीशुदा आदमी है और साथ ही अध्यापक भी । फिर भी वे श्यामा पर आकर्षित है । वे श्यामा को पाना चाहते है । इसलिए एक दिन अपने परिवार के सभी सदस्यों को बाहर भेजकर, श्यामा को जन्मदिन पर उपहार देने का बहाना बताकर उसे अपने घर बुलाते है । श्यामा घर आने से पहले "खिड़कियाँ दरवाजे बन्द करके कमरे में उन्होंने अंधेरा कर रखा था । श्यामा अन्दर पहुँचते ही उन्होंने बिना किसी भूमिका के उसे बाँहों में लेकर अपने होंठ उसके होंठोंपर रख दिए । उसके साथ ही उन्होंने चेष्टा की उसे अन्दर के कमरे में ले जाने की ।" [12] इससे ज्ञात होता है कि गोपाल जी का जो आकर्षण है वह अतिरिक्त सेक्स का आकर्षण है । अपनी पत्नी के होते हुए भी प्रो. मलहोत्रा और गोपाल जी में श्यामा के प्रति सेक्स का जो अतिरिक्त आकर्षण है वह श्यामा को पाकर अपनी सेक्स तृप्ति करने हेतु है ।

'काँपता हुआ दरिया' की स्त्री एलिस, जो शाह साहब के यहाँ 'आया' है, के बारे में लेखक ने लिखा है - "रंग काला होते हुए भी एलिस के गदराए शरीर में अपना ही एक आकर्षण था ।"[13] वह अपने सेक्स की पूर्ति के लिए फौजी बैरकों के साथ राते बिताती है । इतनाही नहीं तो वह खालका के प्रति भी आकर्षित हो जाती है और खालका द्वारा अपनी काम वासना तृप्त करने का प्रयास करती है । इससे स्पष्ट है कि उपन्यास के ये सारे पात्र अपने अतिरिक्त काम की तृप्ति के लिए प्रयास करते है ।

6.7 तलाक की समस्या -

समाज में स्त्री-पुरूष के नये नये बनते बिगड़ते संबंधों के कारण तलाक तथा संबंध विच्छेद की समस्या भी ऊभर रही है । 'न आने वाला कल' उपन्यास की मिसेस दारूवाला का भी संबंध विच्छेद हो गया है । इसी कारण वह अपना जीवन खुलेआम जीती है । परंतु समाज उनकी ओर बुरी नजर से देखता है ।

'अन्तराल' का प्रो. कुमार और उसकी पत्नी का भी नहीं पटता इसी कारण वे दोनों एक दूसरे से अपना संबंध विच्छेद कर एक दूसरे से दूर होते है ।

'काँपता हुआ दरिया' उपन्यास की एलिस खालका को अपनी शादी के बारे में बताती है - "मैंने भी एक बार शादी की थी, आगे कहती है दो महीने के लिए ।" [14] एलिस की यह बात सुन खालका चौंक जाता है । वह खालका को यह भी बताती है कि "वह (पति) मुझे बहुत डाँटता था ... और घर के अंदर बंद रखना चाहता था । एक दिन मुझे गुस्सा आ गया, तो मैने पानी का जग उस पर दे पटका और उसके घर से चली आई ।" [15] वह आगे बताती है - "मतलब दो महीने रही वह शादी । फिर मैंने उसे तलाक दे दिया ।" [16] एलिस ने तलाक तो ले लिया है फिर भी वह दूसरे के साथ संबंध स्थापित करना चाहती है । वह खालका से कहती है कि "तुम तलाक लेकर दूसरी शादी क्यों नही कर लेते ? " [17]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि अगर दो पति-पत्नियों के बीच जब कभी अनबन होती है या दोनों में से किसी का विवाहबाह्य अवैध संबंध स्थापित हो जाता है तब वहाँ तलाक की समस्या उत्पन्न हो जाती है ।

6.8 सामाजिक स्वास्थ के हानि की समस्या -

समाज में जब स्त्री-पुरूष का अवैध काम संबंध स्थापित हो जाता है तब निश्चित ही सामाजिक स्वास्थ बिगड़ जाता है । समाज में उनके प्रति कोई आस्था नहीं रहती । राकेशजी का उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' की खुरशीद जब कुँवारी माता बन जाती है तब उसके मुहल्ले का वातावरण बिगड़ जाता है । मुहल्ले वाले खुरशीद को मुहल्ले से बाहर निकालना चाहते है । मुहल्ले के मरदो ने उसके पिता इबादत अली से कहा था कि - "सुबह तक तुमने कुछ न किया, तो हमें तुम्हारे साथ जबरदस्ती करनी पड़ेगी । हम अपनी बेटियों और बहुओं के बीच ऐसी लड़की को नहीं रहने दे सकते ।" [18] इतना ही नही तो लोग खुरशीद के पिता को मारपीट भी करते है । इस प्रकार वहाँ का सामाजिक स्वास्थ बिगड़ जाता है ।

इस तरह समाज में जब स्त्री-पुरूष के अनैतिक और अवैध काम संबंध स्थापित होते है तब सामाजिक स्वास्थ को हानी पहुँचती है । इससे दंगा-फसाद होता है ओर कभी कभी हत्या भी होती है । जो भी हो विवेच्य उपन्यासों में सामाजिक स्वास्थ के हानि की समस्या परिलक्षित होती है । जिसका चित्रण यथार्थ रूप से हुआ है ।

6.9 यौनग्रस्त रोग की समस्या -

स्त्री-पुरूष के विवाह बाह्य काम संबंधों की एक और महत्त्वपूर्ण समस्या हे यौन ग्रस्त रोग की । दोनों के बनते काम संबंधों के कारण हमारे समाज में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में यह समस्या उभर चुकी है ।

'काँपता हुआ दरिया' की एलिस भी यौनग्रस्त रोग 'सिफलिस' जैसी बीमारी से पीड़ित है । जब वह शाह साहब के यहाँ आया का काम करती थी तब उसे वहाँ शाह साहब की लड़की की देखभाल करने का काम करना पड़ता था । जब एक दिन बच्ची की जबान पर कुछ खतरनाक किस्म के छाले निकल आए थे तब वे डॉक्टर के पास चले जाते हैं । डॉक्टर बताते हैं कि - "इसका कारण किसी ऐसे व्यक्ति का चूमना ही हो सकता है जो गंभीर रूप से सिफलिस जैसी बीमारी से पीड़ित हो ।" [19] तब शाह साहब सोचते हैं -"यह एलिस ही हो सकती थी, क्योंकि बच्चे की देखभाल उसी के सुपुर्द थी ।" [20] इससे स्पष्ट है कि स्त्री पुरुष के बनते - बिगड़ते संबंधों के कारण यौनग्रस्त रोग की समस्या फैलती जा रही है ।

6.10 अवैध संतान की समस्या -

समाज में विवाह के अलावा अन्य जो काम संबंध स्थापित होते है उन्हें अवैध संबंध कहा जाता है । इसी अवैध संबंधों से उत्पन्न संतान को अवैध संतान कहा जाता है । जब समाज में ऐसी कोई अवैध संतान जन्म लेती है तब समाज में वह चर्चा का विषय बन जाती है ।

'न आने वाला कल' उपन्यास की मिसेस ज्याफ्रे की बेटी मॉली क्राउन भी एक अवैध संतान है, जिसे लेकर अन्य लोग हर वक्त उसकी चर्चा करते थे । मिसेस ज्याफ्रे जिस स्कूल में काम करती थी वहाँ एक बात, जो सबसे ज्यादा प्रचलित थी, वह यह थी कि उसकी बेटी "मॉली क्राउन उसके पति की संतान नहीं है । मॉली आधी हिन्दुस्तानी है ।" [21] आदि बातें सभी करते रहते थे । इससे ज्ञात होता है कि जब समाज में अवैध संतान जन्म लेती है तो समाज उसकी ओर बुरी नजर से देखता है ।

वर्तमान समाज में ऐसी संतान पर कभी-कभी बहिष्कार भी डाला जा सकता है । इसी कारण उस अवैध संतान को किसी भी प्रकार का न्याय नहीं मिलता । इससे स्पष्ट है कि स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक जीवन में तनाव बढ़ जाता है । समाज का वातावरण दूषित बनकर सामाजिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है ।

निष्कर्ष -

राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों की विविध समस्याओं का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष तर पहुँचते है कि विवेच्य उपन्यासों में जो समस्याएँ चित्रित है वे वैचारिक भिन्नता, प्रेम का अभाव, अहं, स्वच्छंदता, आधुनिकता का प्रभाव तथा व्यक्ति की अपनी-अपनी मजबूरी के कारण उत्पन्न हुयी है ।

'अंधेरे बंद कमरे' की नीलिमा और 'अन्तराल' की सीमा और 'काँपता हुआ दरिया' की एलिस आधुनिक जीवन जीनेवाली तथा अहं प्रवृत्ति वाली नारियाँ होने के कारण आधुनिकता के जोश में जीवन बिताती हैं । इसी आधुनिकता तथा अहं के कारण उनके परिवार एवं दांपत्य जीवन का सुख गायब हुआ दिखाई देता है । बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरूष संबंधों के कारण पारिवारिक तनाव भी बढ़ जाता है । जैसा कि श्यामा और राजीव के

परिवार में बढ़ा था । सीमा और एलिस जैसी सुशिक्षित और आधुनिक नारी द्वारा नैतिकता का लोप होता जा रहा है । सीमा धार्मिक बंधनों से मुक्त होकर मुस्लिम युवक अख्तर से शादी करना चाहती है तब उसके परिवार का वातावरण बिगड़ जाता है । घर में झगड़ा आरंभ होता है । इसी कारण पारिवारिक तनाव बढ़ जाता है। दूसरी ओर खालका की बेटी नूरा जब मामदा के साथ घूमने निकल पड़ती है तो खालका के घर में भी तनाव बढ़ जाता है । घर में झगड़ा आरंभ होता है । इसी कारण पारिवारिक तनाव बढ़ जाता है । दूसरी ओर मिसेस दारूवाला के समान जब कोई अन्य स्त्री या कुमार जैसा पुरूष दुसरे के दांपत्य जीवन में आ जाता है तब सुखमय दांपत्य जीवन की अपेक्षा दु:खमय दांपत्य जीवन ही दिखाई देता है ।

गोपाल जी जैसे आदमी श्यामा जैसी छात्रापर मोहित हो चुके हैं । वहउनके अतिरिक्त 'सेक्स' के आकर्षण का प्रतिक है । एलिस का खालका पर मोहित होना भी एलिस के अतिरिक्त 'सेक्स' के आकर्षण का प्रतिक है । यहाँ गोपाल जी द्वारा आज की विकृत शिक्षण पद्धति पर भी तीखा व्यंग किया हुआ परिलक्षित होता है । जब स्त्री पुरूष में अवैध संबंध स्थापित हो जाता है तब किसी एक को अपने जीवन में तलाक का सामना करना पड़ता है । कभी सीमा और बीजी जैसों के बीच जो संघर्ष चलता है वह नये और पुराने मूल्यों तथा विचारों की टकराहट को परिभाषित करता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्त्री पुरूष के जो नये संबंध स्थापित हो रहे है और बिगड़ रहे है उनके पीछे कारण अनेक है । इसी बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण परिवार में तनाव का वातावरण, यौन ग्रस्त रोग का फैलाव परिलक्षित होता है । इसी कारण समाज में बीमारी की समस्याएँ निर्माण होकर सामाजिक स्वास्थ को खतरा पहुँचा हुआ परिलक्षित होता है । विवेच्य उपन्यासों में इसका पर्याप्त चित्रण हुआ है ।

संदर्भ ग्रथ - सूची

1. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ - 24
2. वही, पृष्ठ - 147
3. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ -150
4. वही, पृष्ठ -151
5. वही, पृष्ठ -163
6. वही, पृष्ठ - 175
7. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ -98
8. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ -15
9. वही, पृष्ठ - 151
10. वही, पृष्ठ - 151
11. डॉ. घनानंद शर्मा 'जदली' - मोहन राकेश का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ - 101
12. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ -149-150
13. सं. जयदेव तनेजा -एकत्र , पृष्ठ - 318
14. वही, पृष्ठ - 312
15. वही, पृष्ठ - 312
16. वही, पृष्ठ - 312
17. वही, पृष्ठ - 312

18. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 234

19. सं. जयदेव तनेजा - एकत्र, पृष्ठ - 315

20. वही, पृष्ठ - 315

21. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ - 66